

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 13: भावी मनु

14 September 2026



युग युग को स्थान देता है, और काल के विशाल चक्र में मनु के पश्चात् मनु आते हैं। श्रीशुकदेव आने वाले मन्वन्तरों को प्रकट करते हैं — भावी शासक, उनके ऋषि और देवता, और उन सबमें, जगत् को धारण करने के लिए भगवान का अवतरण।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञप्ति में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। पहले छह महान् कॉस्मिक युगों का वर्णन कर और समुद्र-मन्थन की अद्भुत कथा सुनाकर, श्रीशुकदेव अब काल में आगे देखते हुए मन्वन्तरों का अपना वृत्तान्त पूर्ण करते हैं। आठवें स्कन्ध का यह त्रयोदश अध्याय वर्तमान, सातवें मनु और उनके वंशजों का वर्णन करता है, और फिर आने वाले सात मन्वन्तरों को प्रकट करता है — प्रत्येक अपने मनु, ऋषियों, देवताओं और इन्द्र सहित, और उन प्रत्येक में, धर्म की रक्षा और शाश्वत व्यवस्था को धारण करने के लिए परमेश्वर का अवतरण। यह नामों और अनुक्रमों का अध्याय है, किन्तु इसका गहरा संगीत स्पष्ट है: प्रत्येक शासक और प्रत्येक युग अपने क्रम में बीत जाता है, केवल भगवान ही शेष रहते हैं, अपनी सृष्टि को धारण करने बार-बार अवतरित होते हुए।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 13 (त्रयोदश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भावी मनु और आगामी मन्वन्तर
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: गंगा-तट पर चलता हुआ वर्णन, समस्त कॉस्मिक काल के विस्तार को समेटे हुए
- केन्द्रीय विषय: वर्तमान सातवें मनु और उनका वंश; शेष आठ मन्वन्तर, उनके मनु, ऋषि, देवता और इन्द्र; तथा प्रत्येक युग में भगवान का अवतरण
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 13, श्लोक 1-36
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

द्वादश अध्याय में भगवान शिव वैकुण्ठ आए, भगवान विष्णु को गहन स्तुति अर्पित की, और भगवान के मोहिनी रूप के दर्शन की याचना की — केवल भगवान की माया से क्षण भर के लिए अभिभूत होने को, जिससे वे अपनी ही अविचलता से उबरे। समुद्र-मन्थन की महान कथा इस प्रकार पूर्ण होने पर, श्रीशुकदेव अब मन्वन्तरों के ढाँचे पर लौटते हैं, कॉस्मिक युगों के उस वृत्तान्त को आगे बढ़ाते हुए जो उन्होंने इस स्कन्ध के प्रथम अध्याय में आरम्भ किया था।

वर्तमान, सातवें मनु और उनका वंश

श्रीशुकदेव उसी युग से आरम्भ करते हैं जिसमें हम स्वयं निवास करते हैं। वे कहते हैं कि वर्तमान सातवें मनु श्राद्धदेव हैं, सूर्यदेव विवस्वान के पुत्र; यह वैवस्वत मन्वन्तर है।

श्रीशुक उवाच

मनुर्विवस्वतः पुत्रः श्राद्धदेव इति श्रुतः ।

सप्तमो वर्तमानो यस्तदपत्यानि मे शृणु ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच मनुर्विवस्वतः पुत्रः श्राद्धदेव इति श्रुतः सप्तमो वर्तमानो यस्तदपत्यानि मे शृणु

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — वर्तमान, सातवें मनु, जो श्राद्धदेव नाम से विख्यात हैं, विवस्वान के पुत्र हैं। अब मुझसे उनके पुत्रों के विषय में सुनो। (स्कन्ध 8, अध्याय 13, श्लोक 1)

वे वैवस्वत मनु के दस पुत्रों के नाम बताते हैं — इक्ष्वाकु, नभग, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, नाभाग, दिष्ट, करुष, पृषध्र और वसुमान — और इस युग के अधिष्ठाता देवताओं (आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव, मरुत, अश्विनीकुमार तथा ऋभु) का उल्लेख करते हैं, जिनके इन्द्र पुरन्दर हैं, तथा सात महर्षियों का: कश्यप, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भरद्वाज। फिर वे वह सत्य जोड़ते हैं जो सम्पूर्ण सूची को अर्थ देता है —

कि इस वर्तमान युग में भी भगवान अवतरित हुए हैं।

अत्रापि भगवज्जन्म कश्यपाददितेरभूत् ।

आदित्यानामवरजो विष्णुर्वामिनरूपधृक् ॥ ६ ॥

अत्रापि भगवज्जन्म कश्यपाददितेरभूत् आदित्यानामवरजो विष्णुर्वामिनरूपधृक्

अर्थ: इस मन्वन्तर में भी भगवान का जन्म हुआ, कश्यप और अदिति से: आदित्यों में सबसे छोटे, भगवान विष्णु, जिन्होंने वामन रूप धारण किया। (स्कन्ध 8, अध्याय 13, श्लोक 6)

इस प्रकार पहले सात मन्वन्तरों का संक्षेप में वर्णन कर, श्रीशुकदेव कहते हैं कि अब वे आने वाले सात मन्वन्तरों के विषय में बताएँगे, जो इसी प्रकार भगवान के अवतारों से जुड़े हैं।



श्रीशुकदेव वर्तमान सातवें युग — वैवस्वत मन्वन्तर — का वर्णन करते हैं, इसके मनु श्रद्धादेव, इसके दस पुत्रों, इसके अधिष्ठाता देवताओं और सप्तर्षियों, तथा इसमें भगवान के दिव्य वामन रूप में अवतरण सहित (श्लोक 1-7)।

श्रीशुकदेव वर्तमान, सातवें युग — वैवस्वत मन्वन्तर — का वर्णन करते हैं, उसके मनु श्रद्धादेव, उनके दस पुत्रों, अधिष्ठाता देवताओं और सात ऋषियों, तथा उसमें भगवान के दिव्य वामन-रूप में अवतरण सहित (श्लोक 1-7)।

आठवाँ मन्वन्तर: बली इन्द्र बनते हैं

भविष्य की ओर मुड़ते हुए, श्रीशुकदेव आठवें मनु सावर्णि का वर्णन करते हैं, जो छाया से विवस्वान के पुत्र हैं, जिनके पुत्र निर्मोक, विरजस्क आदि होंगे। उस युग में देवता सुतप, विरज और अमृतप्रभ होंगे, और — आश्चर्यजनक रूप से — उनके इन्द्र बली होंगे, वही असुरराज जिनकी कथा आगे के अध्यायों में भरी है।

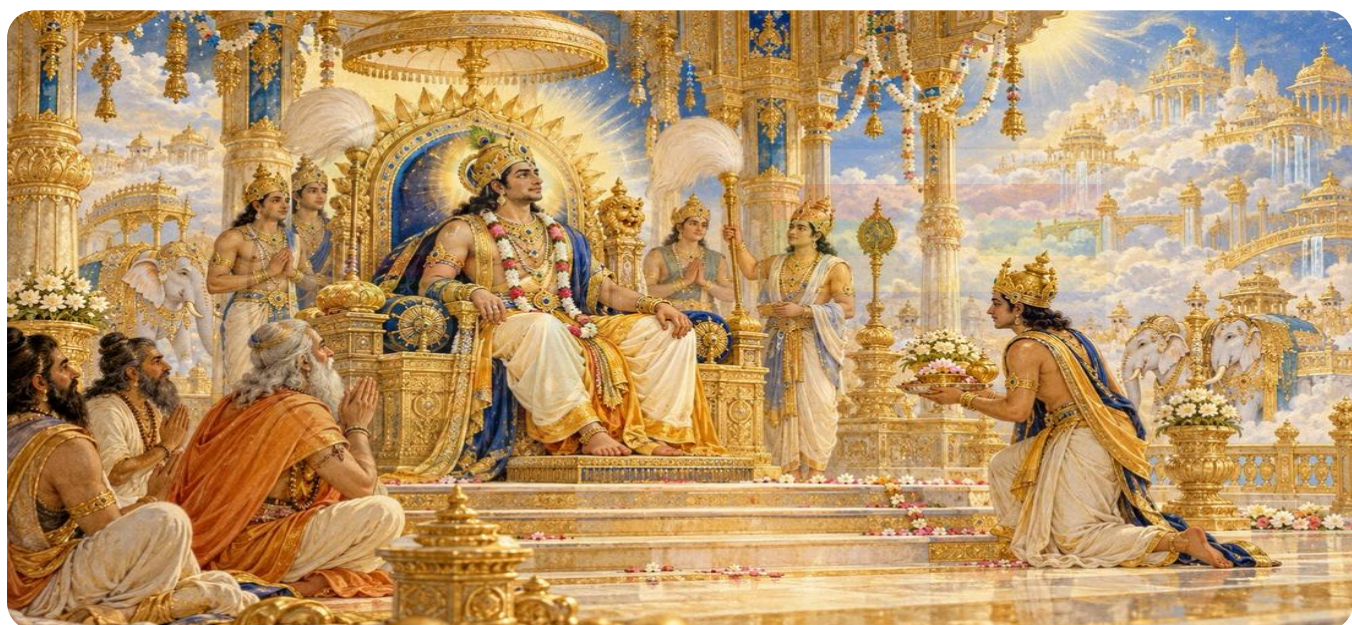
दत्त्वेमां याचमानाय विष्णवे यः पदत्रयम् ।

राद्धमिन्द्रपदं हित्वा ततः सिद्धिमवाप्स्यति ॥ १३ ॥

दत्त्वेमां याचमानाय विष्णवे यः पदत्रयम् राद्धमिन्द्रपदं हित्वा ततः सिद्धिमवाप्स्यति

अर्थ: इस पृथ्वी को भगवान विष्णु को दे देने के पश्चात, जिन्होंने उनसे तीन पग भूमि माँगी थी, बली यथासमय प्राप्त इन्द्रपद को भी त्यागकर अन्ततः परम सिद्धि प्राप्त करेंगे। (स्कन्ध 8, अध्याय 13, श्लोक 13)

श्रीशुकदेव बताते हैं कि यह वही बली है जिन्हें भगवान ने अनुग्रह-चिह्न रूप में बाँधा और फिर सुतल में स्थापित किया, जो स्वर्ग से भी समृद्ध लोक है, जहाँ वे आज भी विराजमान हैं। उस युग के सात ऋषि होंगे — गालव, दीप्तिमान, परशुराम, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, ऋष्यशृंग और व्यास — जो अभी अपने-अपने आश्रम में रह रहे हैं। और स्वयं भगवान सार्वभौम रूप में अवतरित होंगे, देवगुह्य से सरस्वती के गर्भ से, जो वर्तमान इन्द्र से स्वर्ग का सिंहासन छीनकर बली को प्रदान करेंगे।



आगामी आठवें मन्वन्तर में असुरराज बली — जिसने भगवान के वामन अवतार को पृथ्वी दे दी और इन्द्रपद तक त्याग दिया — स्वयं उस युग का इन्द्र बनकर अन्तिम सिद्धि प्राप्त करेगा (श्लोक 11-17)।

आने वाले आठवें मन्वन्तर में असुरराज बली — जिन्होंने भगवान के वामन-अवतार को पृथ्वी दान की और इन्द्रपद तक त्याग दिया — स्वयं उस युग के इन्द्र बनेंगे और परम सिद्धि प्राप्त करेंगे (श्लोक 11-17)।

नवें से चौदहवें मनु तक

फिर श्रीशुकदेव शेष युगों को शीघ्रता से क्रमशः खोलते हैं, प्रत्येक अपने मनु, देवताओं, इन्द्र, ऋषियों और दिव्य अवतरण सहित। नवें मनु दक्षसावर्णि होंगे, वरुण के पुत्र, जिनके युग में भगवान ऋषभ रूप में प्रकट होंगे। दसवें ब्रह्मसावर्णि होंगे, उपश्लोक के पुत्र, जब भगवान विश्वक्सेन रूप में प्रकट होकर इन्द्र शम्भु से मित्रता करेंगे। ग्यारहवें धर्मसावर्णि होंगे, जिनके समय में भगवान धर्मसेतु रूप में तीनों लोकों की रक्षा

करने प्रकट होंगे। बारहवें रुद्रसावर्णि होंगे, जब भगवान स्वधाम रूप में; तेरहवें देवसावर्णि, जब वे योगेश्वर रूप में; और चौदहवें इन्द्रसावर्णि, जब वे बृहद्भानु रूप में प्रकट होकर पवित्र कर्मकाण्ड का प्रचार करेंगे। युग-दर-युग शासक और ऋषि बदलते हैं, किन्तु भगवान का अवतरण वह एक सूत्र है जो उन सबमें पिरोया रहता है।



नवें मनु से लेकर चौदहवें तक, श्रीशुकदेव प्रत्येक आगामी युग को उसके मनु, देवताओं, इन्द्र और ऋषियों सहित नाम देते हैं — और प्रत्येक में भगवान का ऋषभ, विश्वक्सेन, धर्मसेतु, स्वधाम, योगेश्वर और बृहद्भानु रूप में अवतरण (श्लोक 18-35)।

नवें मनु से चौदहवें तक, श्रीशुकदेव प्रत्येक आने वाले युग को उसके मनु, देवताओं, इन्द्र और ऋषियों सहित नाम देते हैं — और उन प्रत्येक में, ऋषभ, विश्वक्सेन, धर्मसेतु, स्वधाम, योगेश्वर तथा बृहद्भानु रूप में भगवान का अवतरण (श्लोक 18-35)।

एक कल्प का मान

समस्त चौदह मन्वन्तरों — भूत, वर्तमान और भविष्य के — के नाम बता देने के पश्चात, श्रीशुकदेव उनके कॉस्मिक महत्त्व से समापन करते हैं।

राजंश्चतुर्दशैतानि त्रिकालानुगतानि ते ।

प्रोक्तान्येभिर्मितः कल्पो युगसाहस्रपर्ययः ॥ ३६ ॥

राजंश्चतुर्दशैतानि त्रिकालानुगतानि ते प्रोक्तान्येभिर्मितः कल्पो युगसाहस्रपर्ययः

अर्थ: हे राजन्, ये चौदह मन्वन्तर, भूत, वर्तमान और भविष्य को समेटे हुए, तुम्हें बताए गए। इनसे एक कल्प — जो चार युगों के एक हजार चक्रों से बनता है — मापा जाता है। (स्कन्ध 8, अध्याय 13, श्लोक 36)

इस प्रकार चौदह मनु मिलकर ब्रह्मा का एक दिन मापते हैं, विधाता के विशाल जीवनकाल के भीतर एक कल्प — काल का इतना विशाल मान कि वह मनुष्य की स्थायित्व की प्रत्येक धारणा को चुपचाप विलीन कर देता है।



चौदहों मन्वन्तर मिलकर ब्रह्मा का एक दिन मापते हैं — एक कल्प, जिसमें चार युगों के एक सहस्र चक्र समाहित हैं — जो कल्पीय काल के विशाल विस्तार को प्रकट करता है (श्लोक 36)।

चौदह मन्वन्तर मिलकर ब्रह्मा का एक दिन रचते हैं, सहस्र चतुर्युगों में फैला वह कल्प जिसकी विशालता में सांसारिक काल-गणना ठहर जाती है (श्लोक 36)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. प्रत्येक युग बीत जाता है; केवल भगवान शेष रहते हैं। चौदह मनु, असंख्य ऋषि, देवता और इन्द्र उठते और गिरते हैं, किन्तु प्रत्येक मन्वन्तर में भगवान अवतरित होते हैं। शासक और युग क्षणिक हैं; उन्हें धारण करने वाली दिव्य उपस्थिति शाश्वत है (श्लोक 6, 36)।
2. भगवान प्रत्येक युग में अवतरित होते हैं। वर्तमान युग के वामन से लेकर आने वाले युगों के ऋषभ, विश्वक्सेन और बृहद्भानु तक, यह अध्याय दर्शाता है कि भगवान अपनी सृष्टि से कभी अनुपस्थित नहीं। उनकी देखभाल समस्त काल में निरन्तर है (श्लोक 6, 17-35)।
3. शरणागति एक असुरराज को भी उन्नत करती है। बली, जिन्होंने भगवान को सब कुछ दे दिया, इन्द्र बनने और फिर परम सिद्धि प्राप्त करने के लिए नियत हैं। जिसने उन्हें उठाया वह उनकी शक्ति नहीं, उनकी शरणागति थी (श्लोक 13)।
4. सच्ची सिद्धि उच्चतम पद से भी परे है। बली मुक्ति पाने के लिए इन्द्र के वांछित सिंहासन तक को त्याग देंगे। यह अध्याय सिखाता है कि जीवन का लक्ष्य उच्च पद नहीं, अपितु भगवान में स्वतन्त्रता है (श्लोक 13)।
5. काल का मान हमारे अहंकार को विनम्र करता है। ब्रह्मा का एक दिन चार युगों के एक हजार चक्रों तक फैला है। ऐसी विशालता के समक्ष, पद और स्थायित्व की हमारी चिन्ताएँ कोमलता से यथार्थ में ढल जाती हैं (श्लोक 36)।

एक भाक्तेमय चिन्तन

पहली दृष्टि में यह अध्याय अपरिचित नामों की मात्र एक सूची-सा लग सकता है — मनु, ऋषि और देवता, जो उन युगों में एक-दूसरे के पश्चात् आते हैं जिन्हें हम कभी न देखेंगे। फिर भी यदि हम अधिक ध्यान से सुनें, तो इस सूची में से कुछ गहराई से आश्चर्य करने वाला उभरता है। इनमें से प्रत्येक युग, चाहे कितना ही गौरवमय हो, अन्त को प्राप्त होता है। प्रत्येक शासक, चाहे कितना ही शक्तिशाली हो, अन्ततः किसी अन्य को स्थान देता है। सम्पूर्ण कॉस्मिक काल के विस्तार में कुछ भी स्थिर नहीं रहता। और इस अनन्त अनुक्रम में भागवत एक अपरिवर्तनीय टेक जोड़ता है: प्रत्येक युग में भगवान अवतरित होते हैं। वे वह एक उपस्थिति हैं जो बीतती नहीं, बार-बार प्रकट होते हुए — वामन रूप में, ऋषि रूप में, योग के आचार्य रूप में, धर्म के प्रचारक रूप में — सज्जनों की रक्षा और जगत की पुनर्स्थापना के लिए। परिवर्तनशील वस्तुओं से चिपके हृदय के लिए इसमें गहरी सान्त्वना है। यह अध्याय कोमलता से हमारी स्थायित्व की पकड़ ढीली करता है और हमें उस एकमात्र स्थायित्व की ओर संकेत करता है जो है। और बली की नियति में, यह एक और आशा देता है: कि जिसने भगवान को सब कुछ खो दिया वह वस्तुतः कुछ भी नहीं खोता, अपितु पहले से कहीं ऊँचा उठाया जाता है, और अन्ततः पूर्णतः मुक्त हो जाता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज एक शान्त क्षण निकालकर अपनी चिन्ताओं को इस अध्याय के मान के समक्ष रखें — ब्रह्मा का एक दिन जो एक हजार युगों तक फैला है। लक्ष्य करें कि आपकी कितनी चिन्ताएँ उन वस्तुओं से बँधी हैं जो, मन्वन्तरों की भाँति, बीतती ही हैं। फिर कोमलता से अपना हृदय उस एक उपस्थिति की ओर मोड़ें जो बीतती नहीं, धीरे से दोहराते हुए “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” काल की विशालता आपको भयभीत न करे अपितु मुक्त करे, अपना भरोसा उन भगवान में रखते हुए जो प्रत्येक युग में अवतरित होते हैं और उन सबके बीच स्थिर रहते हैं।

उपसंहार

आठवें स्कन्ध का त्रयोदश अध्याय श्रीशुकदेव के मन्वन्तर-वृत्तान्त को पूर्ण करता है, हमें वर्तमान, सातवें वैवस्वत मनु के युग से आने वाले सात युगों तक ले जाता है। मनु, ऋषि, देवता और इन्द्र एक भव्य पंक्ति में एक-दूसरे के पश्चात् आते हैं, और प्रत्येक युग में भगवान जगत को धारण करने अवतरित होते हैं — हमारे अपने समय में वामन रूप में, और आगे के युगों में ऋषभ, सार्वभौम, विश्वक्सेन, धर्मसेतु, स्वधाम, योगेश्वर तथा बृहद्बानु रूप में। ऐसे चौदह मन्वन्तर ब्रह्मा का एक दिन मापते हैं, एक ऐसा मान जो काल की प्रत्येक मानवीय गणना को बौना कर देता है। सबसे बढ़कर, यह अध्याय बली की नियति प्रकट करता है, जो अपनी शरणागति से एक दिन इन्द्र रूप में शासन करेंगे और फिर सिद्धि प्राप्त करेंगे — एक ऐसा वचन जो हमें उनकी महान कथा के लिए तैयार करता है, जिसे आगे के अध्याय खोलेंगे।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, त्रयोदश अध्याय, पृष्ठ 790–794।

- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-13-the-future-manus-and-the-coming-manvantaras-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

